हिन्दी - विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर
डॉ० कविता कुमारी सिंह

B. A, Part III -

विषय — ध्वनि परिवर्तन —

ध्वनि परिवर्तन को ध्वनि विकास या ध्वनि विकार भी कहते हैं। क्योंकि कभी तो प्रचलित ध्वनियाँ पूर्णतया परिवर्तित हो जाती है, और कभी वे विकृत होकर नया रूप ग्रहण कर लेती है। कभी किसी शब्द का अल्पप्राण ध्वनि महाप्राण हो जाती है और महाप्राण ध्वनि अल्पप्राण बन जाती है, कभी ध्वनि अनुनासिक हो जाती है तो कभी अनुनासिक ध्वनि साधारण रूप ग्रहण कर लेती है। इस प्रकार ध्वनियों में ~~विशेष~~ विविध प्रकार के विकार उत्पन्न होते रहते हैं, जिनके फलस्वरूप ध्वनियों में विविध प्रकार के परिवर्तन देखे जाते हैं। अतः ध्वनि परिवर्तन की दिशाओं को निम्नलिखित रूप में रखा जा सकता है —

Appointments

① आगम — जिस शब्द में किसी नई ध्वनि को आकर जुड़ जाना आगम कहलाता है। यह मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं —
① आगम स्वर (2) व्यंजन (3) अक्षर।
इसके निम्नलिखित भेद होते हैं (क) आदि स्वरागम (ख) मध्यस्वरागम (ग) अन्त स्वरागम (घ) व्यंजनागम (ङ) मध्य व्यंजनागम (च) अन्त्य व्यंजनागम (छ) अक्षरागम।

(क) आदि स्वरागम — जब किसी शब्द के आरम्भ में कोई स्वर ध्वनि आ जाती है, तो उसे स्वरागम कहते हैं, यह स्वर-ध्वनि ह्रस्व होती है। जैसे — स्कूल > इस्कूल, स्तुति > अस्तुति, स्थान — इस्थान।

मध्य स्वरागम — अज्ञान, आलस्य एवं बोलने की सुविधा के लिए कभी-कभी श मध्य भी स्वरागम होता है। जैसे

चर्म > चरम, स्नान > सनान, जन्म > जनम आदि)

(ग) अन्त्य स्वरागम — जब किसी शब्द के अंत में कोई स्वर ध्वनि आकर जुड़ जाती है, तो वहाँ अन्त्य स्वरागम होता है —

दवा > दवाई, स्वप्न > सपना

व्यंजनागम के तीन भेद होते हैं —

(क) आदि व्यंजनागम — जब किसी शब्द के आरम्भ में कोई व्यंजन ध्वनि आ जाती है तो उसे आदि व्यंजनागम कहते हैं जैसे —

अस्थि > हड्डी, उल्लास > हुलास, ओष्ठ > होठ

(ख) मध्य व्यंजनागम — जब किसी मूल शब्द के मध्य में किसी व्यंजन का आगम होता है, तो वहाँ मध्य व्यंजनागम होता है। जैसे —

वानर > बन्दर, शाप > श्राप, सुनर > सुन्दर

(ग) अन्त्य व्यंजनागम — शब्दों के अंत में नये व्यंजन आगम को अन्त्य व्यंजनागम कहते हैं। जैसे —

रामाकृष्ण > रामाकृष्णान, कुल > कारट

(ii) अक्षरागम — अक्षरागम भी आदि मध्य एवं अन्त्य होता है। जैसे-

आदि अक्षरागम — गुंजा > घुँघुर (भोजपुरी)

मध्य अक्षरागम — खल > खरल

अन्त्य अक्षरागम — जीभ > जीभई

मुख > मुखड़ा